तारकेश्वर नारायण अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हरिगांव, भोजपुर

नाम:- विजय कुमार झा (सहायक प्राध्यापक) संस्कृत

कक्षा:- B.Ed 1st year

विषय:- C-4 language across the curriculum

प्रकरण:- निबंधात्मक प्रश्न ।

चूंकि इस प्रकार की परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर बंद की तरह लिखे जाते हैं अतः इसको निबंधात्मक परीक्षा के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार की परीक्षा की विशेषता यह होती है कि इसमें छात्रों की अभिव्यक्ति सुलेख शायरी तथा भाषा का भी मूल्यांकन हो जाता है। परंतु इसका एक दोष यह है कि इसमें परीक्षा का व्यक्तिगत दृष्टिकोण फल अंको को प्रभावित करता है।

इस परीक्षा विधि में आत्मक तत्व की प्रधानता रहती है। इसी कारण इस परीक्षा प्रणाली की कटु आलोचना की जाती है पुस्तक कुछ भी हो यह परीक्षा प्रणाली बालकों की रुचि की संतुष्टि करती है।

निबन्ध आत्मक परीक्षा प्रणाली के गुण

निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली के गुण निम्नलिखित हैं

1. यह परीक्षा बालकों को अपने विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करती है।
2. इस परीक्षा प्रणाली में भाषा के ज्ञान का परीक्षण हो जाता है।
3. इस परीक्षा प्रणाली में प्रश्नों की रचना सरलता से की जाती है। इस प्रकार प्रश्न पत्र के निर्माण करने में सरलता रहती है। पाठ्यक्रम के विभिन्न अंगों से प्रश्न बना दिए जाते हैं।

4. इस परीक्षा की तैयारी करने में विद्यार्थी को खंड विधि का सहारा लेना पड़ता है। अनेक दृष्टि से समय विधि किसे अध्ययन करना खंड विद की अपेक्षा श्रेष्ठ रहता है।
5. यह परीक्षा बालकों की तर्क और निर्णय आदि शक्ति के विकास में सहायक होती है।
6. इसमें बालक को कुछ प्रश्नों के उत्तर एक निश्चित समय के अंदर लिखने पड़ते हैं पोस्ट ऑफिस प्रकार बालकों को समय की पाबंदी का ज्ञान हो जाता है।
7. यह परीक्षा प्रणाली कम खर्चीली होती है।

निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली के दोष

निबंधात्मक परीक्षण के दोष निम्नलिखित प्रकार हैं

1. निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में बालक की सफलता सहयोग पर निर्भर करती है। विद्यार्थी कि वर्ष भर की पढ़ाई का मूल्यांकन केवल 3 घंटे के समय में किया जाता है। वर्षभर कठोर परिश्रम करने वाला विद्यार्थी यदि बीमार पड़ जाता है दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है तो उसके वर्ष भर का परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। इसके विपरीत वर्ष भर पढ़ाई के प्रति लापरवाही दिखाने वाला बालक परीक्षा के कुछ दिन पूर्व कुछ प्रश्नों के उत्तर रट लेता है। सहयोग से यदि वे प्रश्न परीक्षा में आ जाते हैं तो वह उत्तीर्ण हो जाता है।
2. निबंधात्मक परीक्षा में जो प्रश्न पत्र बनाए जाते हैं उनमें पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछा जाना संभव हो पाता है। इस प्रकार यह प्रणाली पूरे पाठ्यक्रम से संबंधित बालक की योग्यता का मूल्यांकन नहीं कर पाती है
3. निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन दोषपूर्ण होता है। ऐसा दोस्त निम्नलिखित कारणों से पाया जाता है-

- कुछ परीक्षक पक्षपात पूर्ण होकर उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हैं।
- अनेक परीक्षकों के पास उत्तर पुस्तिकाओं को जांचने के लिए समय का अभाव रहता है फल स्वरुप वह बहुत शीघ्रता में उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार उनका मूल्यांकन दोषपूर्ण हो जाता है।
- उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन पर परीक्षकों की मनोवृति का भी प्रभाव पड़ता है फलस्वरूप मूल्यांकन दोषपूर्ण हो जाता है।

- प्रायः यह भी पाया जाता है कि थका हुआ अथवा अस्वस्थ परीक्षक उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन भली-भांति नहीं कर पाता। इस प्रकार उसका मूल्यांकन प्रमाणित नहीं होता है।

4. निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली द्वारा बालक की योग्यता का वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो पाता है।

5. निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में विश्वसनीयता का अभाव पाया जाता है। एक प्रश्न पत्र को अनेक बार मूल्यांकन करने को दिए जाने पर विभिन्न समय में विभिन्न अंग प्रदान किए जाते हैं।

6. निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को विषय का वास्तविक ज्ञान नहीं हो पाता। साधारणतया परीक्षा के कुछ समय पूर्व विद्यार्थी प्रश्नोत्तर पुस्तकें तथा संभावित प्रश्न उत्तर खरीद लेते हैं। हुए उनके प्रश्नों के उत्तर रख लेते हैं फूल तक इस प्रकार उन्हें विषय वस्तु वास्तविक रूप में समझने में नहीं आती है। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है।

7. निबंधात्मक प्रकार की परीक्षा प्रणाली में बालकों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। परीक्षाकाल में विद्यार्थी दिन-रात पड़ता है। उसकी दिनचर्या नियमित हो जाती है इसके फलस्वरूप उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है।

8. इस परीक्षा प्रणाली में बालक प्रश्न पत्रों का समाधान अनुचित उपायों से करने की चेष्टा करते हैं। में नकल करने में अनुचित उपायों का सहारा लेते हैं इस प्रकार उन्हें गलत आदतों का निर्माण होता है।

निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए उपाय

निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली को उपयोगी बनाने के लिए कुछ सुझाव निम्न प्रकार हैं

1. लंबे उत्तर वाले कम प्रश्नों की अपेक्षा लघु उत्तर वाले प्रश्नों की संख्या अधिक होनी चाहिए। इस प्रकार संपूर्ण पाठ्यक्रम पर प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
2. विभिन्न प्रकार के मानसिक स्तर के बालकों को प्रश्न पत्र में अपनी क्षमता के अनुसार प्रश्न मिले जाने चाहिए
3. प्रश्नों की प्रकृति बालकों की परिपक्वता के अनुसार हो।
4. प्रश्न पत्र का निर्माण करते समय इन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रश्नों की संख्या के अनुसार हो।
5. अकस्मात बीमार विद्यार्थी को दोबारा परीक्षा देने की सुविधा दी जानी चाहिए।
6. उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में सुधार किया जाना चाहिए। परीक्षकों को उत्तर पुस्तिकाओं को जांचने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए उचित पारिश्रमिक भी दिया जाना चाहिए ताकि वे मन लगाकर मूल्यांकन करें। परीक्षकों से नमूने की कापियां मांग कर देखी जानी चाहिए और उनके अंक प्रदान करने के मापदंड की जांच की जानी चाहिए।
7. वर्ष में एक बार परीक्षा होने के साथ-साथ पाक्षिक अथवा मासिक परीक्षाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए। इन अंको को वार्षिक परीक्षा में जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रकार बालक के वर्ष भर के परिश्रम की जांच की जानी चाहिए।